Hindi
Explore – Journal of Research for UG and PG Students
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

'दिनकर का राष्ट्रधर्मः आज के संदर्भ में'

अमृता कुमारी • बेर्नादेत्त टोप्पो • मीनू कुमारी • शरण सहेली

Received : December 2010
Accepted : February 2011
Corresponding Author : Sharan Saheli

Abstract : *भारतीय साहित्य के कालजयी कवियों में अग्रगण्य राष्ट्रकवि 'दिनकर' का रचना-संसार हिंदी का ऐश्वर्य है। सरस्वती के इस वरदपुत्र का पूरा नाम रामधारी सिंह 'दिनकर' था। राष्ट्र के प्रति उनकी सेवाओं के पुरस्कार स्वरूप भारतीय मनीषा ने उन्हें राष्ट्रकवि विशेषण से अलंकृत किया था। यह नाम हिन्दी साहित्य के किसी भी विद्यार्थी के लिए, हरेक भारतीय के लिए जाना-पहचाना, बहुत ही अपना सा लगनेवाला नाम है। वजह यह है कि दिनकर ने अपनी लेखनी से सामाजिक बुराइयों के विरूद्ध आजीवन संघर्ष किया। उन्होंने राष्ट्रीय गौरव एवं मान-सम्मान का शंखनाद करके संपूर्ण देश में अपनी ओजस्वी वाणी से राष्ट्रप्रेम की एक ऐसी लहर पैदा कर दी थी, जो आज भी हमें प्रेरणा देती है। प्रश्नावली द्वारा स्नातक् तृतीय वर्ष हिन्दी प्रतिष्ठा की छात्राओं के विचार जानने का प्रयास किया गया। विशेष रूप से यह जानने का प्रयास किया गया कि दिनकर की कविता क्या आज भी युवाओं के बीच उतनी ही लोकप्रिय है जितनी अपने रचनाकाल में थी? विशेष रूप से यह भी जानने का प्रयास किया गया कि क्या दिनकर का काव्य आज भी युवापीढ़ी में राष्ट्रीय मूल्यों को स्थापित करने में सक्षम है?*

संकेत शब्दः- *राष्ट्रधर्म, साहित्यिक अवदान, उद्‌बोधन, क्रान्ति, युग-परिवर्तन ।*